आज की मुरली का सार --

बाबा ने कहा, अच्छे बच्चे अपनी सर्विस की ड्युटी पूरी कर बाबा की याद में मस्त रहते हैं.

इस कलयुगी असार संसार में रहते, खुद को दुनिया की बातों से या झरमुई-झगमुई की बातों से अलिप्त कैसे रखे? इसकी युक्ति हे, खुद को, घर-संसार में रहते, सबकुछ संभालते, निमित समझ सर्व की सेवा करो और जब भी फ्री टाइम मिले तो प्यारे बाबा की याद में बीतावो.

हम सब जानते हे, जैसे कलियुग अन्त की और बढ़ेगा, बहार का वायुमंडल और ज्यादा विकारी, गंदा होता जायेगा. ऐसे वायुमंडल में अगर हम, खुद को शामिल करेंगे तो हमारी अब तक की कमाई सब चट हो जायेंगी. ऐसे गंदे वायुमंडल से बचने का एक ही आधार हे, प्यारे बाबा की याद. हमें अपने में ये आदत डालनी पडेगी की जब भी फ्री टाइम होता हे तो हम एकाग्रता की शक्ति को युज कर बाबा की यादमे साइलेन्स में बैठ जाये और दुनियावी झरमुई-झगमुई की बातों से अपने आप को अलिप्त रखे.

कलयुगी वायुमंडल से खुद को बचाने का दूसरा रास्ता हे, स्वदर्शन चक्र घुमावों. सतयुग को याद करो. जैसे बाबा ने आज कहा, सतयुग में हीरो को हम पत्थर की तरह युज करेंगे, हमारे महलों में लगायेंगे. ऐसे सतयुग की बातों को याद करने से हमारा मन स्वतः हर्षित हो जायेगा और कलयुगी वायुमंडल की असर से मुक्त हो जायेगा.

कलयुगी वायुमंडल से खुद को बचाने का तीसरा रास्ता हे, बाबा की अव्यक्त वाणी ओ का पठन करें या बाबा - मम्मा की साकार वाणी ओ को सुने.

ॐ शांति.